''उत्तर बिहार में सिंचाई परियोजना और तटबंधो का ऐतिहासिक अध्ययन (20वीं सदी के विशेष संदर्भ में)''

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

इतिहास (सामाजिक विज्ञान संकाय)

में

पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रारूप

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 गोविन्द कुमार
पासवान
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
आर0 सी0 एस0 कॉलेज,
मझौल, बेगूसराय

शोधार्थी

अवनीश कुमार
वर्ग क्रमांक–11
पैट रौल नं0–E2210078

शोध का शीर्षक :

''उत्तर बिहार में सिंचाई परियोजना और तटबंधों का ऐतिहासिक अध्ययन (20वीं सदी के विशेष संदर्भ में)''

भूमिका :

उत्तर बिहार भौगोलिक दृष्टिकोण से हिमालय का तराई क्षेत्र है और अपनी इस बनावट के कारण यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहा और इसके कारण निःसंदेह वहशी विदेशी आक्रमणकर्त्ता के बर्बरता और पीड़ा का जो सामना पंजाब अथवा उत्तर पश्चिम सीमा पर रहने वाले लोगों को करना पड़ा उससे यहाँ के निवासी मुक्त रहे। मगर यह भौगोलिक परिस्थिति जिसने विदेशी आक्रमण से सुरक्षा में वरदान का कार्य किया वहीं यहाँ के निवासियों के लिए कठिनपाई भी उत्पन्न करती है। इन कठिनाईयों में सबसे महत्वपूर्ण नदियों के द्वारा बाढ़ की विभीषिका और मृदा अपरदन है।

मानव मस्तिष्क हमेशा से सुलभ, जीवन जीने की आशा रखता है, और इसी प्रत्याशा में इसका संघर्ष प्रकृति से होता रहा है। इन्हीं संघर्षो ं में से एक की उपज बाँध अथवा तटबंधा का निर्माण है। भारत आर्य सभ्यता के समय से ही एक कृषि प्रधान देश रहा है और इस सभ्यता से लेकर वर्तमान तक के शासक वर्ग ने इसको ध्यान में रख कर विभिन्न सिंचाई परियोजना और तटबंधों का निर्माण करवाया है। भारत में कार्यरत प्राचीनतम बाँध तमिलनाडु का कल्लनई बाँध है।

उत्तर बिहार के संदर्भ में अब तक उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार 12 वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने कोसी नदी पर बाँध के निर्माण का

प्रयास किया था। आधुनिक भारत में कंपनी शासन के पश्चात राजस्व अथवा लाभ के अधिक चाहत के स्वार्थ में अंग्रेजों ने जेम्स रेनेल (1778) और फ्रांसिस बुकानन जैसे सर्वेक्षणकर्त्ताओं से सर्वेक्षण करवाये।

इन सर्वेक्षणों से उन्हें यह ज्ञात हुआ कि उत्तर बिहार का एक वृहद क्षेत्र कुछ समय के लिए जहाँ असिंचित रह जाता है वहीं कुछ समय के लिए बाढ़ग्रस्त, जिससे कृषि पर बेहद बुरा असर पड़ता है। इसके पश्चात अधिक राजस्व के चाहत में अंग्रेजों का ध्यान लोगों को सिंचाई उपलब्ध करवाने पर गया मगर अनुमान में लागत की अपेक्षा कम मुनाफे के खतरे के कारण अंग्रेज इसे टालते गये।

स्वतंत्रता के पश्चात पूर्व के अपेक्षा इस ओर अधिक ध्यान दिया गया और पथम पंचवर्षीय योजना के तहत कुल बजट का 17% सिंचाई के क्षेत्र पर खर्च करना तय किया गया। इससे प्रभावित होकर राजनीति विज्ञान के हेनरी हार्ट ने 'नए भारत की नदियों' के रूपान्तरण का संगीतमय विवरण दिया। हार्ट के मुताबिक ये परियोजनाएँ नए भारत के लिए महान निर्माण कार्य थे। मगर अफसोसजनक रूप से हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि इन परियोजनाओं के क्रियान्वयन में जितना महत्व पंजाब और दक्षिण के भारतीय राज्यों को मिला, उत्तर बिहार उससे वंचित रहा।

शोध कार्य की समयावधि :

इस शोध कार्य की समयावधि 20 वीं सदी से 2000 ई0 तक होगा । इसके द्वारा उत्तर बिहार के क्षेत्र में जो सिंचाई परियोजना अथवा तटबंधों का निर्माण हुआ उसका ऐतिहासिक विवरण बताया जाएगा। साथ ही इस निर्माण

कार्यों से इस क्षेत्र के निवासी के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को भी सामने लाने का प्रयास किया जायेगा।

पूर्व अध्ययन (साहित्यिक सर्वेक्षण) : –

मेरे द्वारा शोध समस्या के रूप में चयनित इस विषय के संदर्भ में बेहद कम पुस्तक उपलब्ध है। इनमें से अब तक मैं जिन पुस्तकों से अवगत हूँ, पढ़ा हूँ या इस शोध सार को लिखने के लिए इस्तेमाल किया हूँ, वह हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' की पुस्तक ''बिहार की नदियाँ'', डॉ0 दिनेश कुमार की ''कोसी नदी की कहानी दुई पाटन के बीच में'' गौरीनाथ की ''कोसी के किसान'', दिनेश कुमार की ही ''बागमती नदी की सद्‌गति'' और ''बगावत पर मजबूत मिथिला की कमला नदी''। इसके अलावा इस शोध समस्या के कुछ पहलू ए0 एल0 बाशम के ''अद्‌भूत भारत'' और कुछ रामचन्द्र गुहा के ''गाँधी के बाद भारत'' से भी मिलता है।

अध्ययन का उद्देश्य महत्त्व एवं प्रासंगिकता :–

किसी भी नए शोध के अंतर्गत केवल नए सत्य एवं सिद्धान्तों की खोज ही नहीं अपितु पुराने सत्य को नए ढंग से प्रस्तुत करना, पुराने सिद्धांतों को नवीन रूप प्रदान करना, उपलब्ध तथ्यों को नए तरीके से स्पष्ट करते हुए उनके मध्य अतंरसंबंधों का विश्लेषण करना इत्यादि सम्मिलित होता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रारूप का मुख्य उद्देश्य उत्तर बिहार के क्षेत्रों में बाँधों तटबंधों और सिंचाई परियोजना का ऐतिहासिक क्रम जानना है।

इस शोध का महत्त्व इस बात में होगी कि यह तर्कपूर्ण एवं तार्किक, निष्कर्ष तथा आँकड़ों पर आधारित होगा। साथ– ही–साथ तटबंध, बाँध और सिंचाई परियोजना के निर्माण के पश्चात स्थानीय स्तर पर पड़े सामाजिक और

आर्थिक प्रभाव का भी विश्लेषण किया जाएगा। इसके अलावा यह भी जानने की कोशिश किया जाएगा कि इन निर्माण कार्यो को जिस लक्ष्य को ध्यान में रख कर तैयार किया गया था उस पर कितना खड़ा उतरा।

इसकी प्रासंगिकता इस बात मे है कि आज भी उत्तर बिहार की अधिकतर आबादी बाढ़ से प्रभावित है और यहाँ के किसान जलोढ़ मिट्टी के मालिक होने के बावजूद भी अपने जीवनयापन को सही ढंग से निर्वाह नहीं कर पाते हैं। पंजाब, हरियाणा, उत्तर पश्चिम उत्तर प्रदेश के किसानों को जो सामाजिक और आर्थिक वर्चस्व अथवा सम्मान हासिल है, उससे यहाँ के किसान वचित है । इस शोध के द्वारा इसके तर्कपूर्ण दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन पद्धति :–

प्रस्तुत शोध कार्य विश्लेषणात्मक एवं विवरणात्मक पद्धति के सहारे संपादित किया जाएगा। जिसमें विषय–वस्तु से संबंधित पुस्तकों, प्रकाशनों, कमीशन के रिपोर्ट अभिलेख आदि का सहारा लिया जाएगा। साक्ष्यों की विविधता के परिप्रेक्ष्य में साक्ष्य संग्रह की पारंपरिक पद्धति के साथ– साथ गैर–पारम्परिक मौखिक पद्धति का अवलम्बन किया जाएगा। इसके साथ–साथ स्थानीय लोगों से बात कर उनके अनुभव को जाना जाएगा। क्योंकि अभी भी उत्तर बिहार के क्षेत्र में एक बड़ी जीवित आबादी निवास करती है जिन्हें तअबंध बनने से पूर्व और उसके पश्चात का अनुभव है।

स्रोत सामग्री की उपलब्धता :–

प्रस्तावित शोध कार्य को संपादित करने के लिए मौलिक तथा सामान्य स्रोतों से तथ्यो का संग्रह किया जाएगा। मौलिक स्रोतों में सरकारी अभिलेख,

घोषणाएँ, वक्तव्य, प्रकाशित शोध ग्रन्थ आदि का सहारा लिया जाएगा तथा सामान्य स्रोत के रूप में अध्येय विषय पर प्रकाशित पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, प्राकशित निबंध तथा समाचार पत्रों की सूचनाएँ सम्मिलित की जाएगी।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा उत्तर बिहार के संदर्भ में किस तरह सिंचाई परियोजना और तटबंधों का विकास हुआ उसको जानने की कोशिश करेगा। साथ–ही–साथ इस शोध कार्य द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं के विषय में जानने की कोशिश की जाएगी :–

(1) औपनिवेशिक काल के पूर्व एवं पश्चात उत्तर बिहार में सिंचाई परियोजना और तटबंधों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है।

(2) इस परियोजना का उत्तर बिहार के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर सकारात्मक एवं नकारात्मक किस प्रकार का प्रभाव पड़ा इसे स्पष्ट करने का प्रयास करूँगा।

(3) सिंचाई व्यवस्था क्या अपने निर्माण उद्देश्य को पूरा कर सकी। क्या इस व्यवस्था का सुचारू रूप से संचालन हो सका और जितने क्षेत्रों के सिंचाई का अनुमान अथवा दावा किया गया उस पर खड़ा उतरा अथवा नहीं ।

अध्ययन का रूप–रेखा :–

प्रस्तावना

(1) प्रथम अध्याय : औपनिवेशिक काल से पूर्व सिंचाई परियोजना और तटबंधों

का ऐतिहासिक परीदृश्य

(2) द्वितीय अध्याय : 20वीं सदी में उत्तर बिहार के सिंचाई परियोजना और

तटबंधों का ऐतिहासिक अवलोकन

(3) तृतीय अध्याय : सिंचाई परियोजना और तटबंधा के निर्माणाों का सामाजिक

और सांस्कृतिक जीवन पर प्रभाव

(4) चतुर्थ अध्याय : उत्तर बिहार के आर्थिक दशा एवं दिशा पर सिंचाई

परियोजना के प्रभाव का सूक्ष्म अवलोकन करेंगे

(5) पंचम अध्याय : निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. मिश्रा, डॉ0 दिनेश कुमार – ''कोसी नदी की कहानी दुई पाटन के बीच में'' लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून, 2006

2. गौरीनाथ –''कोसी के किसान'' सुपौल (बिहार) , 2019

3. 'सहृदय' हवलदार त्रिपाठी– ''बिहार की नदियाँ'',

4. झा, सुभाष, झा, अंजलो, ''मिथिलाक संस्कृति के झलक विदेह नंदिली वैदेही'' टीडीसी पब्लिकेशन, 24 जनवरी 2022

5. मिश्रा, डॉ0 दिनेश कुमार–''बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदीं'' घोघरडीहा प्रखंड स्वराज्य विकास संघ (बिहार), 2005

6. बाशम, ए.एल–''अद्भूत भारत'' शिवपाल अग्रवाल एण्ड कपनी आगरा

7. गुहा, रामचंद्र ''भारत गांधी के बाद'' पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2011

8. चौधरी, पी0 सी0 रॉय, ''एग्रीकल्चर एण्ड इरीगेशन बिहार डिस्ट्रीक्ट गजेटियर्स, दरभंगा , 1964

9. अनवर, सकील, ''बाढ़ और जलाशय में क्या अंतर है''? एम.जागरणजोश. कॉम 17/1/2019

10. मिश्रा, डॉ0 दिनेश कुमार–''पहली बाढ़ नीति'' एम हिन्दी. इंण्डियावाटरपोर्टल. ओर्ग.

11. अहमद, फ्रजांद, ''बिहार फ्लड्स'' सॉल्यूशन टू द एनुअल मिजरी लाईज इन नेपाल , इंडिया, टुडे 15 अक्टूबर 1987, अपडेटेड 17 दिसम्बर, 2013

12. हर बार तबाही की नई कहानी लिखती है कोसी, अरबों खर्च के बाद भी नजीता 'जलप्रलाय' एटीटीः डब्लूडब्लूडब्लू.इटीवीभारत.कॉम, जनवरी 19, 2021

13. सिंह, मनोज, ''3800 कि0 मी0 लम्बा तटबंध बनाकर बिहार को क्या मिला'' डब्लूडब्लूडब्लू.दीथर्ड पोल.नेट अक्टूबर 02, 2020

14. व्यास, गोपाल कृष्णा नदी जोड़ परियोजना : एक परिचय हिन्दी. इण्डिया. वाटरपोर्टल. ऑर्ग 5/4/2014

15. झा, भोगेन्द्र, ''रिवर मेनेजमेन्ट ऑफ फ्लड, ड्राउट एण्ड पॉवर शार्टेज इन बिहार, डिसम्बर, 1998

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 गोविन्द कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
आर0 सी0 एस0 कॉलेज, मझौल, बेगूसराय

शोधार्थी

अवनीश कुमार
वर्ग क्रमांक–11
पैट रौल नं0–E2210078